KISAN PLUS TV | KISAN PLUS Radio

RNI NO. MPHIN/2022/85285
डाक पंजी. क्र.- MP/KDW/93/2023-24
Email id: haldharkisankgn@gmail.com

राष्ट्रीय मासिक समाचार पत्र

हलधर किसान

वर्ष 03 अंक 02 | अप्रैल 2024 | पृष्ठ- 8 मूल्य- 5.00 रुपए

प्रतिस्पर्धा के इस दौर में बीज भंडार ने बनाई अपनी अलग साख: श्रीकृष्ण दूबे

किसानों का हित ही हमारा ध्येय, सामुहिक प्रयासों से साल.दर. साल बीज भंडार को मिल रही मजबूती: विनोद जैन

बीज भंडार के अवार्ड सेरेमनी में देश- विदेश की बीज कंपनी प्रतिनिधि सहित फ्रेंचाईजी ऑनर हुए शामिल

इंदौर। प्रतिस्पर्धा के इस दौर में जैन बीज भंडार एग्रो प्रायवेट लिमिटेड ने बीज व्यापार में जो साख, अपनी एक अलग पहचान बनाई है वह सराहनीय है। आज जो हम इस संस्था का स्वरुप देख रहे है, उसके पीछे जो संघर्ष, परिश्रम है वह अनुकरणीय है। इस संस्था की सफलता का राज इनका किसानों से जुड़ाव अपने मुनाफे से ज्यादा किसान को अच्छी पैदावार हो इसलिए अच्छा बीज उपलब्ध कराना, यही मंत्र इन्हें ओर संस्थाओं से अलग बनाता है। उक्त विचार प्रतिष्ठित बीज संस्थान जैन बीज भंडार एग्रो प्रायवेट लिमिटेड के अवार्ड सेरेमनी समारोह में बतौर मुख्य अतिथि जागरुक कृषि आदान विक्रेता संघ इंदौर के जिलाध्यक्ष श्रीकृष्ण दुबे ने खरगोन में आयोजित गसमारोह के दौरान व्यक्त किए। समारोह में देश- विदेश की नामी बीज कंपनी के प्रतिनिधियों के साथ ही बीज भंडार के प्रदेशभर में संचालित हो रही फ्रेंचाईजी के संचालक, मार्केटिंग, आईटी टीम एवं कर्मचारी शामिल हुए। श्री बर्वे ने बीज भडार संस्थापक श्री जैन की देश के सफल उद्यमी रतन टाटा से तुलना करते हुए कहा कि 77 वर्ष की उम्र में भी श्री जैन जिस तरह व्यापार के साथ ही आदान विक्रेता संघ के पदाधिकारी होकर सक्रियता दिखाते है वह युवाओं के लिए प्रेरणादायी है।

बीज व्यवसाय भी सेवा का माध्यम -

आईटी डायरेक्टर नितिन परसाई ने कहा कि बीज व्यवसाय भी सेवा का माध्यम है। क्योंकि किसान देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है यदि वह बेहतर उत्पादन करेगा तो देश के अन्न के भंडार भरेंगे। इसलिए आप सेवा और कंपनी विस्तार का भाव लेकर काम करेंगे तो कंपनी की साख बनी रहेगी। समारोह में फ्रेंचाईजी ऑनर जितेंद्र मंडराह ने भी अपने अनुभव साझा किए। आईटी एक्सपर्ट तुषार मालवीय ने बीज भंडार के सीड कार्ड सहित आईटी से जुड़ी तकनिकी जानकारी दी। समारोह का सफल संचालन सीईओ विशाल नाईक ने किया। श्री नाईक को फ्रेंचाईजी प्रोजेक्ट के माध्यम से कंपनी को विस्तार देने में अहम भूमिका निभाकर बीज कंपनी और फ्रेंचाईजी ऑनरों के बीच सामंजस्य बनाकर बेबाकी से अपनी राय एवं बात रखने का श्रेय दिया गया। आभार अकाउंटेट अनिल कुशवाह ने माना।

मार्जिन के साथ किसान का हित भी जरुरी

समारोह की अध्यक्षता कर रहे कंपनी के संरक्षक, मार्गदर्शक विनोद जैन (बाबूजी) ने कहा कि उन्होंने 1976 में किसानों को गुणवत्ता युक्त बीज उपलब्ध कराने के उद्देश्य से बीज भंडार दुकान की शुरुआत की थी। कंपनी कर्मचारियों और फ्रेंचाईजी ऑनरों को सफलता का मंत्र देते हुए कहा कि किसी भी प्रतिष्ठान की सफलता दुकानदार का दुकान को दिया समय, ग्राहको से व्यवहार मायने रखता है। अपने मार्जिन के साथ किसान का हित भी जरुरी है। किसी कंपनी का एकाधिकार न हो इसलिए किसान को हर कंपनी का बीज जो गुणवत्ता रखता है उसके बारे में किसान को जरुर बताएं, उसे इस्तेमाल करने के लिए प्रेरित करें, जिससे किसान को भी लाभ हो और कोई कंपनी बीज पर अपना एकाधिकार न जमा सके।

देशभर में बीज भंडार को फैलाने का लक्ष्य लेकर कर रहे काम

जो इंसान पानी से नहाते है वह लिबास बदलते है और जो पसीने से नहाते है वह इतिहास बदलते है। इन पंक्तियों से कंपनी संचालक विवेक जैन ने कर्मचारियों, फ्रेंचाईजी ऑनरो और कंपनी प्रतिनिधियों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि बीज भंडार ने पहले शहर फिर जिले में अपनी साख बनाई इसके बाद 2016में खंडवा में पहली फ्रेंचाईजी शुरु की, इसके बाद कोरोना काल जैसा व्यापार के लिए विपरित दौर भी आया लेकिन बीज भंडार के कुशल प्रबंधन से यह दौर भी गुजर गया और हमने पिछले 8 साल में 15 एजेंसिया शुरु की है और वर्तमान में 77 नए आवेदन है, जो पड़ोसी राज्यों के है। यहां एजेंसी शुरु करने की प्रक्रिया तेजी से आगे बढ़ रही है। श्री जैन ने कहा कि बाबूजी का सपना है कि बीज भंडार देशभर में पहुंचे, उसी सपने को साकार करने के लिए फ्रेंचाईजी शुरु करने के साथ ही सोशल और प्रिंट, इलेक्ट्रानिक प्लेटफार्म भी शुरु किया है। आज बीज भंडार का हलधर किसान प्लेटफार्म के 2 लाख व्यूवर है। यह सफलता अकेले बीज भंडार की नही बल्कि कंपनी स्टॉफ, पदाधिकारियों, कर्मचारियों की है। इसमें एजेंसी ऑनर भी शामिल है। बीज भंडार के इस परिवार में जुड़ रहे नए सदस्यों से संस्था की ग्रोथ भी बढ़ रही है, उपस्थित सभासदों से सवाल किया कि अब हमें अगले वर्ष इस ग्रोथ को बढ़ाकर 28 करोड़ पर ले जाना है, जिसमें उपस्थित सभी सदस्यों ने एक स्वर में सहमति जताई।

गर्मियों में जल्दी तैयार होने वाली फसलें

हलधर किसान कृषि सलाह। भारत एक कृषि प्रधान देश है। देश में तीन सीजन याने खरीफ, रबी और ग्रीष्म कालीन फसलें लगाई जाती है। देश सहित प्रदेशों में तेजी से सिंचाई योजनाओं पर काम चलने से अब सुदुर अंचलों तक तीनों मौसम में फसलें लगाई जाने लगी है। वर्तमान में रबी सीजन फसल कटाई का दौर चल रहा है, कई खेतों में कटाई हो चुकी है।

यदि किसान थोड़ी सी सतर्कता के साथ किसान अगर अभी से पौध तैयार कर खाली होने वाले खेत में इनकी बुआई कर दें तो समय से पहले आई फसल का बाजार भाव अच्छा मिलने से उनका लाभ बढ़ जाएगा।

किसान भाइयों का निरंतर प्रयास रहता है कि कम समय में अधिक फसलें उगाई जाए ताकि मुनाफा भी अधिक हो, इसीलिए किसान भाइयों को जल्दी तैयार होने वाली फसलें उगाने को प्राथमिकता देनी चाहिए। आज लेख में हम जानेंगे की सबसे जल्द तैयार होने वाली फसल कौन सी है।

मूली– यह बुआई के 50 दिन बाद यह मंडियों में बेचने के लिए तैयार हो जाती है। इसकी पत्तियां साग बनाने के काम आती हैं और इनके जड़ यानि कन्द से सब्जियां तो बनती ही है साथ ही सलाद या रायता भी बनाया जाता है।

खरबूजा –खरबूजा की फसल साल में केवल एक बार गर्मियों में उगाया जाता है । यह खाने में यह बहुत ही स्वादिष्ट लगता है और स्वास्थवर्धक भी है, इसकी एक खास बात यह है कि इसकी सिंचाई की आवश्यकता बहुत कम होती है।

खीरा – बरसात तथा गर्मियों दोनों सीजन में उगाई जाने वाली फसल है। यह भी सबसे जल्द तैयार होने वाली फसल है। यह अधिक सर्दी को सहन नहीं कर पाती है इसीलिए गर्मियों में इसे उगाना उपयुक्त है। यह कम समय में अधिक पैदावार देने वाली फसल है।

ककड़ी और तरबूज की फसल– यह भी केवल गर्मियों में उगाई जाती है। ककडी और तरबूज की खेती के लिए गर्म जलवायु की आवश्यकता होती है, इसलिए गर्मियों का मौसम इनकी खेती के लिए अनुकूल होता है।

धनियां– बुआई करने के 50 दिन के बाद धनियां मंडियों में बेचने के लिए तैयार हो जाता है। धनियां खेतों के साथ.साथ घरों में भी गमले में भी उगाया जा सकता है। धनियां में रोग और कीट तो कम लगते ही हैं साथ ही इसमें सिंचाई बहुत कम करनी होती है। इसकी खेती गर्मी तथा बरसात में की जाती है।

पालक –पालक भी जल्दी तैयार होता है। इसकी फसल बुआई के 50 दिन बाद कटाई के लिए तैयार हो जाती है। यह पूरे वर्ष उगाई जाने वाली फसल है।

अच्छी खबर: अब 30 जून तक कीटनाशक लायसेंसधारी व्यापारी कर सकते है 12 हफ्ते का सर्टिफिकेट कोर्स

आल इंडिया कृषि आदान विक्रेता संघ के प्रयासों से बढ़ी समयसीमा

हलधर किसान. इंदौर। देशभर के कीटनाशक व्यापारियों के लिये राहतभरी खबर है। जिन व्यापारियों ने 12 हफ्ते का सर्टिफिकेट कोर्स नही किया और उनके लायसेंस निरस्त होने वाले थे उन्हें अब 30 जून तक राहत मिल गई है। ऑल इंडिया कृषि आदान विक्रेता संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष मनमोहन कलंत्री एवं अन्य राष्ट्रीय पदाधिकारियों के प्रयासों से शासन ने सर्टिफिक्रेट कोर्स करने की अवधि बढा दी है। संगठन के राष्ट्रीय प्रवक्ता व संजय रघुवंशी ने कृषि आदान विक्रेता संघ को इसकी जानकारी दी है।

जागरूक कृषि आदान विक्रेता संघ इंदौर के जिलाध्यक्ष श्रीकृष्ण दुबे ने वीडियो सन्देश के माध्यम से कीटनाशक व्यापारियों को बताया केंद्र सरकार ने कीटनाशक व्यापारियों के लिये 12 सप्ताह का सर्टिफिकेट कोर्स अनिवार्य किया हैए इस कोर्स के बाद लायसेंस नवीनीकरण की अनिवार्यता नही होती। वर्तमान में 1 फरवरी 2017 का पहले के कीटनाशक लाइसेंसधारी व्यापारियों को 12 सप्ताह के सर्टिफिकेट कोर्स को करने की अवधि जो की 31 दिसंबर 2023 को समाप्त हो चुकी हैए उसे केंद्र सरकार ने आल इंडिया संगठन की मांग पर 30 जून 2024 तक बढ़ा दिया है और इस बारे में एक गजट नोटिफिक्रेशन भी जारी कर दिया है। व्यापारियों के हित मे आये इस निर्णय पर मप्र के कृषि आदान विक्रेता संघ की ओर से राष्ट्रीय पदाधिकारीयो के साथ 'केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री कैलाश चौधरी, रायडा संरक्षक जयपुर सांसद रामचरण बोहरा,

मोहनलाल गुप्ता एवं ज्वाइंट सेक्रेटरी श्रीमती अर्चना सिन्हा, रायड़ा अध्यक्ष पुरुषोत्तम खण्डेलवाल' के प्रति आभार किया है। श्री दुबे ने प्रदेश के सभी कीटनाशक व्यापारियों से अपील की है कि जिन्होंने कोर्स नही किया है वह जल्द से जल्द अपना रजिस्ट्रेशन कराए ओर प्रशिक्षण प्राप्त करे, जिससे व्यापार संचालन में परेशानी न हो।

क्यों जरुरी है कोर्स?

कीटनाशक के खुदरा विक्रेताओं/ वितरकों जिनके पास भारत सरकार के गजट राजपत्र के अनुसार शैक्षणिक अर्हता नहीं है, उन सभी खुदरा विक्रेताओं/ वितरकों को अपना व्यवसाय जारी रखने के लिए पादप प्रबंधन पर 12 सप्ताह का सर्टिफिकेट कोर्स करना जरूरी है।खरीफ व रबी में बुवाई की जाने वाली विभिन्न फसलों में कीट एवं व्याधियों का प्रकोप पाया जाता है। कृषको द्वारा फसल को कीट एवं व्याधियों से बचाने के लिए विभिन्न प्रकार के कीटनाशक, फफूंदनाशक एवं बायरस जनित रोगों के लिए खुदरा विक्रेताओं से दवा क्रय कर उपयोग में ली जाती है। कुछ कीटनाशक विक्रेताओं द्वारा शैक्षणिक योग्यता नही होने या अपूर्ण होने से कृषको को गलत दवायें उपयोग हेतु दे दी जाती है। जिससे फसलो को कीट एवं व्याधियों के प्रकोप से नुकसान हो जाता है तथा किसान को आर्थिक हानि का सामना करना पड़ता है। अधिकतर किसान सीधे ही खुदरा विक्रेताओं से सम्पर्क कर फसल पर कीट एवं व्याधियो के लक्षणों के आधार पर दवा का क्रय करते है परन्तु खुदरा विक्रेताओं द्वारा कभी.कभी सही जानकारी के अभाव में वांछित दवा कृषको को उपलब्ध नहीं करा पाते हैं।

मुआवजा राशि से असंतुष्ट किसान, 7 हजार की राशि लौटाने एसडीएम ऑफिस पहुंचा किसान

हलधर किसान. भोपाल।

मप्र के खरगोन जिले में हाल ही में हुई ओलावृष्टि, तुफान से प्रभावित हुई फसलों का मुआवजा किसानों को मिलने लगा है। गोगावां जनपद के ग्राम देवली के किसान दशरथ राठौड़ को भी 7 हजार 250 रुपए फसल नुकसानी राशि मिली है। लेकिन इस राशि से किसान संतुष्ट नही है। सोमवार को उक्त राशि लेकर किसान राठौड़ एसडीएम कार्यालय पहुंचे। यहां नायब तहसीलदार विजय उपाध्याय से मुलाकात कर शासन स्तर से मिली मुआवजा राशि पर असंतोष जताते हुए राशि लौटाने की बात कही, जिस पर नायब तहसीलदार ने उन्हें एसडीएम या कलेक्टर से मिलने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि ऐसा कोई प्रावधान नही है जो किसानों को दी गई राहत राशि वापस लें।

राठौड़ ने नायब तहसीलदार को एक आवेदन भी दिया जिसमें उसने जिक्र किया कि उनकी 5 एकड़ कृषि भूमि है। 2 एकड़रकबे में मक्का फसल लगाई थी, जो तुफान की चपेट में आने से नष्ट हो इ गई। उक्त फसल की बुआई सहित निंदाई, गुडाई, खाद, बीज, दवाई आदि रखरखाव में उसे करीब 40 हजार रुपए खर्च आया था, फसल भी पककर लगभग तैयार थी, जिससे उसे करीब डेढ़ लाख रुपए के उत्पादन की उम्मीद थी, लेकिन प्राकृतिक आपदा से उन्हें यह नुकसान उठाना पड़ा। उल्लेखनीय है कि जिले के भगवानपुरा, भीकनगांव, झिरन्या क्षेत्र में ओलावृष्टि, तुफान से रबी फसलों को भारी नुकसान पहुंचा था। किसान खराब फसलें लेकर कलेक्ट्रेट भी पहुंचे थे, रोजाना आंदोलन किए जा रहे थे।

सरकार का उपहार उपहास के समान

कृषक राठौड़ ने बताया कि शासकिय अधिकारी कहते है कि आप इस राशि को सरकार का उपहार समझकर रख लें। राठौड़ का कहना है कि सरकार का यह उपहार उन्हें उपहास के समान लग रहा हे, वह इस राशि से संतुष्ट नही है, क्योंकि वे मेहनतकश किसान है, फसल से ही आर्थिक लाभ की उम्मीद रखते है। यदि सरकार किसानों को राहत ही देना चाहती है तो उन्हें सम्मानजनक राशि दें, जिससे उन्हें लागत मूल्य तो मिल सके। उनके खेत में समूची फसल को नुकसान पहुंचा, सर्वे में भी यही रिपोर्ट दर्ज की गई थी, इसके बावजूद महज कुछ हजार रुपए दिए गए जिसे में स्वेच्छा से सरकार को लौटाना चाहता हूं। हालांकि किसान से फिलहाल राशि वापस नही ली गई है।

अजब– गजब: अब गाय के दूध में मिलेगा इंसूलिन, वैज्ञानिकों ने किया दावा

हलधर किसान (रिसर्च) नई दिल्ली। वैज्ञानिकों ने कई मौको पर अजीबोगरीब परीक्षण कर लोगों को हैरत में डाला है। अब एक बार फिर एक अनोखा प्रयोग करते हुए डायबिटीज के खिलाफ लड़ाई में एक बड़ी सफलता हासिल की है।

यह चमत्कारिक खोज ब्राजील इलिनोइस यूनिवर्सिटी (अर्बन.शैंपेन) के पशु वैज्ञानिक मैट व्हीलर के नेतृत्व में शोधकर्ताओं ने एक ऐसी जेनेटिकली मोडिफाइड गाय तैयार की है, जिसके दूध में मानव इंसुलिन पाया गया है।

यह शोध, जो बायोटेक्नोलॉजी जर्नल में प्रकाशित हुआ है, वैश्विक स्तर पर इंसुलिन की आपूर्ति की चुनौती के लिए एक संभावित समाधान प्रदान करता है। अभी तकए डायबिटीज रोगियों के लिए इंसुलिन मुख्य रूप से आनुवंशिक रूप से संशोधित बैक्टीरिया या खमीर का उपयोग करके बनाया जाता है। यह नया तरीका, अगर सफल साबित होता है, तो इंसुलिन उत्पादन में क्रांति ला सकता है।

कैसे हुआ शोध

शोधकर्ताओं ने गाय के भ्रुणों में प्रोइंसुलिन (इंसुलिन का अग्रदूत) के निर्माण के लिए जरूरी विशिष्ट मानव डीएनए कोड डाला। इसके बाद इन भ्रुणों को सामान्य गायों में प्रत्यारोपित किया गयाए जिसके परिणामस्वरूप एक स्वस्थ बछड़े का जन्म हुआ। हालांकि, इस गाय को प्राकृतिक रूप से गर्भवती कराने का प्रयास असफल रहा, लेकिन वैज्ञानिक दूध उत्पादन को प्रेरित करने में सफल रहे।

गाय के दूध में मिला इंसुलिन

दूध के विश्लेषण में पाया गया कि उसमें मानव प्रोइंसुलिन और इंसुलिन के समान आणविक भार वाले प्रोटीन मौजूद हैं। इसके अतिरिक्तए शोध से यह भी संकेत मिलता है कि गाय का दूध प्रोइंसुलिन को इंसुलिन में भी परिवर्तित कर सकता है। हालांकि अभी उत्पादन का स्तर कम है, लेकिन शोधकर्ताओं का मानना है कि इस तकनीक में बड़े पैमाने पर उत्पादन की काफी संभावना है।

ट्रांसजेनिक गायों के दूध में मिला प्रोटीन

अध्ययन के लेखकों के अनुसार, ट्रांसजेनिक गायों के दूध में पुनः संयोजक प्रोटीन का उत्पादन एक रोमांचक प्रणाली है। दूध में मौजूद प्रोटीएज (प्रोटीन को तोड़ने वाले एंजाइम) इस प्रक्रिया में अहम भूमिका निभा सकते हैं। ये प्रोटीएज प्रोसेसिंग में मदद कर सकते हैं और पुनः संयोजित प्रोटीन को कार्यात्मक प्रोटीन में बदल सकते हैं। वहीं, कुछ दूध प्रोटीएज पुनः संयोजित प्रोटीन को नष्ट भी कर सकते हैं। यह शोध दुनिया भर में डायबिटीज रोगियों के लिए इंसुलिन की आपूर्ति को स्थिर और संभावित रूप से अधिक किफायती बनाने के लिए एक नया रास्ता खोलता है।

इंसुलिन क्या है?

इंसुलिन एक तरह का हॉर्मोन है जो हमारे शरीर में अग्नाशय (पैंक्रियाज) नाम के अंग द्वारा बनाया जाता है। यह शरीर में रक्त शर्करा के स्तर को नियंत्रित करने में अहम भूमिका निभाता है। आसान शब्दों में कहें तोए हम जो भी खाते.पीते हैं उसमें से शरीर को ऊर्जा मिलती है। यह ऊर्जा मुख्य रूप से ग्लूकोज (रक्त शर्करा) से प्राप्त होती है। भोजन पचाने के बाद ग्लूकोज हमारे रक्तप्रवाह में मिल जाता है। इंसुलिन शरीर की कोशिकाओं को संकेत देता है कि वे ग्लूकोज को अवशोषित कर लेंए जिससे शरीर को ऊर्जा मिलती है।

इंसुलिन नहीं बनने से क्या होता है?

अगर शरीर पर्याप्त मात्रा में इंसुलिन का उत्पादन नहीं कर पाता है या कोशिकाएं इंसुलिन के प्रति संवेदनशील नहीं होती हैं, तो यह स्थिति डायबिटीज कहलाती है। डायबिटीज की स्थिति में ब्लड शुगर लेवल लगातार ऊंचा रह सकता है, जिससे शरीर को कई तरह की समस्याएं हो सकती हैं।

टिकाऊ खेती में नैनो उर्वरक की भूमिका

उर्वरकों का सफेल प्रयोग किसानों के लिए लाभजनक कृषि का आधार माना गया है। उर्वरकों का यदि संतुलित उपयोग न हो, तो वे पर्यावरण के लिए हानिकारक भी हो सकते हैं। पारंपरिक उर्वरकों का उत्पादन, भंडारण एवं स्थानांतरण, जहां एक प्रमुख चुनौती है, वहीं इनके असंतुलित प्रयोग के दुष्प्रभाव बृहत रूप से देखे गए हैं। इसके साथ ही इनकी उपयोग दक्षता भी दिन प्रति दिन कम होती जा रही है। अतः उच्च पोषक तत्वों के साथ साथ मृदा और पर्यावरण के साथ अनुकूलता वाले उर्वरकों को विकसित करने की आवश्यकता है। नैनो प्रौद्योगिकी गुणात्मक विशेषताओं को बढाने के लिए नैनो उर्वरकों के रूप में एक आशाजनक विकल्प के रूप में तेजी से उभर रही है। कृषि एवं खाद विज्ञान के क्षेत्र में इस प्रौद्योगिकी के विभिन्न घटकों का महत्वपूर्ण योगदान है। नैनो उर्वरक में पोषक तत्वों के नैनो फॉर्मूलेशन शामिल होते हैं, जो रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग के संभावित प्रतिकूल प्रभावों के साथ साथ उर्वरक अनुप्रयोग आवृत्ति को भी कम करते हैं। इसके अलावा, नैनो उर्वरकों के प्रयोग से रासायनिक अवशेष में भी भारी कमी आती है। इससे न सिर्फपर्यावरण की सुरक्षा सुनिश्चित होती है, बल्कि लागत की भी बचत होती है। नैनो जैव उर्वरकों के उपयोग से पारंपरिक उर्वरकों के इस्तेमाल में 50.75 प्रतिशत की कमी आने की उम्मीद है।

नैनो उर्वरक पारंपरिक उर्वरकों, मृदा कोलाइड्स और पौधों के भागों से निकाले गए नैनो कण होते हैं। ये 1.100 नैनो मीटर व्यास के आसपास होते हैं। विशिष्ट सतह क्षेत्र और अत्यंत सूक्ष्म आकार होने के कारणए ये नियत्रित एवं धीमी गति से पोषक तत्वों को उन्मुक्त करते हैं। ये मृदा की उर्वराशक्ति, उत्पादकता और कृषि उत्पादों की गुणवत्ता और पोषक तत्व को उपयोग दक्षता में सुधार के लिए जरूरी होता है। नैनो सामग्री की उच्च

संपादकीय

प्रतिक्रियाशीलता के कारण, ये उर्वरकों के साथ परस्पर क्रिया कर पौधों को पोषक तत्वों के बेहतर एवं प्रभावी अवशोषण में सक्षम बनाते हैं। नैनो उर्वरक पोषक तत्वों को लोचिंग व वाष्पीकरण द्वारा होने वाली हानि को कम करते हैं। ये अधिक प्रतिक्रियाशील होने के कारण पोषक तत्वों की जैव उपलब्धता में भी सुधार करते हैं। इसके साथ ही पर्यावरणीय जोखिमों को भी कम करते हैं।

नैनो यूरिया की सफलता के बाद, अब नैना लिक्विड को भी मंजूरी मिल गई है और इसके साथ ही इसे खेतों में इस्तेमाल करने का मार्ग भी प्रशस्त हो गया है। ये नवाचारी और स्वदेशी तौर पर विकसित तरल उर्वरक फसलों के जरूरी पोषण के लिए किए जाने वाले आयात और सरकारी सब्सिडी के क्षेत्र में बड़ा बदलाव लाने वाले साबित हो सकते हैं। हकीकत तो यह है कि हमारा देश अगले कुछ वर्षों में उर्वरकों के क्षेत्र में आत्मनिर्भर होने के बारे में भी सोच सकता है क्योंकि तब तक उन उर्वरकों का नैनो संस्करण भी तैयार हो जाएगा जो फिलहाल परीक्षण के दौर से गुजर रहे हैं। इससे उर्वरक सब्सिडी के लिए किया जाने वाला आवंटन पूरी तरह तो समाप्त नहीं होगा लेकिन फिर भी उसमें काफी कमी आएगी।

उल्लेखनीय है कि यूरिया की कीमतों में उछाल आ रहा है, जिससे सरकार को सब्सिडी बढ़ानी पड़ रही है। यह बढ़ोतरी इसलिए कि यूक्रेन.रूस संघर्ष के बाद उर्वरकों की अंतरराष्ट्रीय कीमतों में तेजी से इजाफा हुआ है। यहां तक कि गत वित्त वर्ष के दौरान भी उर्वरक सब्सिडी का बिल करीब 1.6 लाख करोड़ रुपये रहा था। सरकार को अक्सर संसद से पूरक वित्तीय अनुदान लेना पड़ता है ताकि वह बढ़ते उर्वरक सब्सिडी बिल की भरपाई कर सके। अन्यथा उस बकाये को अगले वित्त वर्ष के लिए बढ़ा दिया जाता है। इससे उर्वरक उद्योग में नकदी का भीषण संकट व्याप्त हो जाता है। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि देश में अब तक वाणिज्यिक रूप से इस्तेमाल किए जा रहे हाई.टेक नैनो उर्वरक न केवल सामान्य उर्वरकों की तुलना में काफी सस्ते और प्रभावी हैं बल्कि उनके अलावा भी कई लाभ हैं। उनका पोषण इस्तेमाल अधिक किफायती होता है और वे मिट्टी की उर्वरता में सुधार करके उपज और फसल गुणवत्ता में सुधार कर सकते हैं। उदाहरण के लिए खेतों में परीक्षण के दौरान नैनो यूरिया को 80 फीसदी तक किफायती पाया गया जो पारंपरिक यूरिया की तुलना में दोगुना है।

अनुमान है कि इसके इस्तेमाल से उपज में तीन से 16 फीसदी का इजाफा हुआ यानी किसानों को प्रति एकड़ करीब 2,400 रुपये से 5,700 रुपये का फायदा हुआ। नैनो यूरिया की एक बोतल में 500 मिलीलीटर तरल उर्वरक होता है और इसकी कीमत 240 रुपये है। यह कीमत भारी सब्सिडी पर मिलने वाले यूरिया के 45 किलो के बैग की तुलना में काफी कम है जबकि दोनों में समान मात्रा में नाइट्रोजन है। नैनो.डीएपी की कीमत 600 रुपये प्रति बोतल है जो सामान्य डीएपी के 50 किलो के बैग के बराबर होगी।

9 अप्रैल से शुरु होंगे चैत्र नवरात्र

ज्योतिषाचार्य डॉ. सुदीप जैन

अजमेर। 9 देवियों की आराधना का पर्व चैत्र मास 9 अप्रैल से शुरू होने जा रहा है, यह उत्सव 17 अप्रैल तक मनाया जाएगा। चैत्र नवरात्र पर शहर के मंदिरों में जबरदस्त धूम दिखाई देती है। इस अवसर पर शहर सहित क्षेत्र के देवी मंदिरों में लगातार नौ दिनों तक अनुष्ठान आदि किए जाते हैं।

ज्योतिष डॉ. सुदीप सोनी (जैन) के अनुसार सनातन धर्म में चार नवरात्र होती है, दो गुप्त और दो उत्सव की नवरात्र होती है। चैत्र और शारदेव नवरात्र नवरात्रि का पर्व बहुत ही महत्वपूर्ण माना जाता है। इस बार चैत्र नवरात्र की तिथियों को लेकर लोगों के बीच में असमंजस बना हुआ है कि यह 8 अप्रैल से आरंभ होंगे या फिर 9 अप्रैल से होंगे। पंचांग के अनुसार चैत्र नवरात्रि का आरंभ 9 अप्रैल से होगा। 9 दिनों का यह महापर्व राम नवमी के साथ 17 अप्रैल को समाप्त हो जाएगा। चैत्र नवरात्रि प्रतिपदा का आरंभ 8 अप्रैल को देर रात 11 बजकर 50 मिनट पर होगा और अगले दिन यानी 9 अप्रैल को रात के समय 8 बजकर 30 मिनट पर समाप्त हो जाएगी। इसलिए उदया तिथि की मान्यता के अनुसार नवरात्रि का आरंभ 9 अप्रैल से होगा। इन 9 दिनों में आदिशक्ति मां दुर्गा के 9 स्वरूपों की पूजा की जाती है। धार्मिक मान्यताओं में माना गया है कि इन 9 दिनों में मां दुर्गा से जुड़ी सभी शक्तियां जागृत हो जाती हैं।

घोड़े पर सवार होकर आएंगी मां दुर्गा

चैत्र नवरात्रि में मां दुर्गा इस बार घोड़े पर सवार होकर आएंगी। मां दुर्गा का वाहन इस बात पर निर्भर करता है कि नवरात्रि का पर्व किस दिन से आरंभ हो रहा है। पंचांग के अनुसार इस साल नवरात्रि का आरंभ 9 अप्रैल मंगलवार से हो रहा है। इसलिए मां दुर्गा का वाहन अश्व यानी कि घोड़ा होगा। मां दुर्गा की घोड़े पर सवारी को आने वाले साल के लिए शुभ संकेत नहीं माना जाता है। घोड़े पर देवी का आना युद्ध छत्र भंग यानी कई स्थानों पर सत्ता परिवर्तन का संकेत दे रहा है। इस साल देश में आम चुनाव होने हैं। माना जा रहा है कि चुनाव के नतीजे काफी आश्चर्यजनक हो सकते हैं। इसके अलावा घोड़े पर मां दुर्गा का आना राष्ट्रीय आपदा साथ लेकर आता है। पूरे देश को कोई भयंकर प्राकृतिक आपदा झेलनी पड़ सकती है। ये पर्व देशभर में बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है। इन नौ दिनों में माता के भक्त उपवास रखते हैं और उनके अलग.अलग स्वरूपों की उपासना करते हैं। इसके अलावा नवरात्रि में कई शुभ कार्य किए जाते हैं। शास्त्रों के अनुसार नवरात्रि की नौ तिथियां ऐसी होती हैं, जिसमें बिना मुहूर्त देखे कोई भी शुभ कार्य किया जा सकता है। धार्मिक शास्त्रों में कुल चार नवरात्रि का वर्णन है। चैत्र और शारदीय नवरात्रि के अलावा दो गुप्त नवरात्रि भी होती है, क्योंकि इस दौरान सार्वजनिक रूप से माता दुर्गा के नौ स्वरूपों की पूजा की जाती है।

कलश स्थापना का शुभ मुहूर्त

पंचांग की गणना में बताया गया है कि इस बार कलश स्थापना के लिए सिर्फ 50 मिनट का समय मिल रहा है। कलश स्थापना सुबह 6 बजकर 12 मिनट से लेकर 10 बजकर 23 मिनट तक कर सकते हैं। 4 घंटे 11 मिनट का यह मुहूर्त सामान्य मूहूर्त माना जा रहा है। वहीं घटस्थापना के लिए अभिजीत मुहूर्त 12 बजकर 3 मिनट से 12 बजकर 53 मिनट तक कुल 50 मिनट का है।

सर्वार्थ के साथ बनेगा अमृत योग

इस बार चैत्र नवरात्रि के पहले दिन सर्वार्थ सिद्धि योग और अमृत योग का शुभ संयोग भी बन रहा है। यह सर्व कार्य सिद्धि के लिए बहुत ही शुभ माना जा रहा है। ज्योतिषाचार्य सोनी ने कहा कि चैत्र नवरात्रि पर इस साल कई अद्भुत संयोग बन रहे हैं। इस दिन अभिजीत मुहूर्त में अमृतसिद्धि और सर्वार्थ सिद्धि योग का अद्भुत योग का निर्माण होगा। अभिजीत मुहूर्त दोपहर 12 बजकर 3 मिनट से शुरू होगा जो कि 12 बजकर 54 मिनट तक रहने वाला है। अमृतसिद्धि और सर्वार्थ सिद्धि योग 9 अप्रैल को सुबह 7 बजकर 32 मिनट से लेकर पूरे दिन तक रहेंगे।

वर्ग पहेली-3

बाएँ से दाएँ

1. पत्ता गोभी (5)
5. शोभा, तैयारी, सज्जा (4)
6. राय, सम्मति (3)
8. संसार, दुनिया (3)
10. काँटा (2)
11. वरन (3)
12. किस समय (2)
13. कंगन (3)
14. आडंबर, ढोंग (3)
15. बिल्कुल तैयार, सजा.धजा, घंटे की लगातार आवाज (4)
16. धनुष.बाण (5)

ऊपर से नीचे

2. नाव खेने वाला, केवट (3)
3. धन.सम्पत्ति, कोष (3)
4. अंदाजा, अनुमान (4)
5. गुण.दोष की विवेचना (5)
7. निरुत्तर, बेजोड़, अद्वितीय (4)
9. देखना, निहारना (5)
10. रावण की बहिन (4)
12. रह रह कर मन में पीड़ा होना (4)
13. काँटा, शूल (3)
14. तिथि (3)

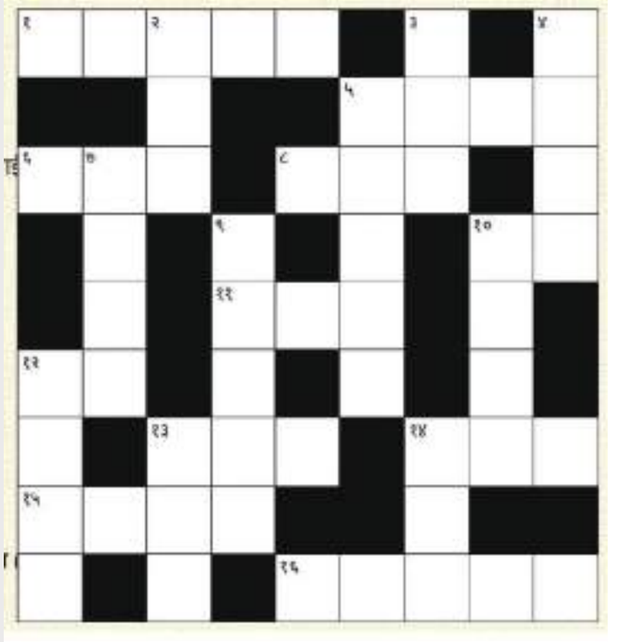

वर्ग पहेली 1 का सही उत्तर

बीज भंडार के अवार्ड सेरेमनी में 13 कैटेगरी में मिले पुरुस्कार, 5 बेस्ट परफार्मर को मिला आकर्षक उपहार

सहकारी समितियों को 30 अप्रैल तक करें कम्प्युटरीकृत: कलेक्टर

खरगोन मप्र। प्रदेश की प्राथमिक कृषि साख सहकारी संस्थाओं को कम्प्युटरीकरण करने की प्रक्रिया तेज हो गई है। कलेक्टर कर्मवीर शर्मा ने जिले में संचालित हो रही सभी सोसायटियों को 30 अप्रैल तक कम्प्युटरीकरण करने के निर्देश दिए है।

कलेक्टर ने जिले की 128 सहकारी संस्थाओं में किए जा रहे कम्प्युटरीकरण कार्य की समीक्षा के दौरान निर्देशित किया कि सर्वोच्च प्राथमिकता के साथ 30 अप्रैल तक समितियों को गो.लाईव कर कम्प्युटरीकरण कार्य पूर्ण कर लिया जाए। सहकारिता विभाग एवं बैंक से तकनीकी रूप से दक्ष एक अधिकारी को सम्मिलित कर कम्प्युटरीकरण कार्य की निगरानी एवं पर्यवेक्षण के लिए दो सदस्यीय फ्लाईंग स्क्वाड़ का गठन करने के निर्देश दिए, जो पैक्स को इस कार्य के लिए क्षैत्र में भ्रमण कर सतत मार्गदर्शन एवं तकनीकी सहयोग प्रदान करेगा।

बैठक में सहकारी बैंक सीईओ पीएस धनवाल ने कहा कि किसी भी समिति को यदि इस संबंध में कोई तकनीकी समस्याएं आती है तो टिकटिंग टूल पर अपनी समस्याओं को दर्ज करें एवं बैंक मुख्यालय स्थित कंट्रोल रूम प्रभारी अनिल कानूनगों से 94259.29425 पर संपर्क करें। बैठक में जिला विकास प्रबंधक नाबार्ड विजेन्द्र पाटील ने पैक्स कम्प्युटाईजेशन योजना के महत्व को बताते हुए इस योजना का समय सीमा में क्रियान्वयन सुनिश्चित करने की बात कही। सहायक आयुक्त सहकारिता के आर अवासे, अतिशय कंपनी के जिला समन्वयक एवं बैंक के मास्टर ट्रेनर सहित पैक्स के समिति प्रबंधक/कम्प्युटर ऑपरेटर उपस्थित थे।

संगठन की मजबूती के लिए व्यापारियों की एकता जरुरी: श्री कलंत्री

हलधर किसान. रतलाम। कृषि आदान विक्रेता संघ का होली मिलन एवं नवीन कार्यकारिणी गठन समारोह नगर में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय अध्यक्ष मनमोहन कलन्त्री बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुए। इस दौरान नवीन कार्यकारिणी का गठन भी किया गया।

श्री कलंत्री ने नवीन कार्यकारिणी को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि मिलन समारोह संगठन को मजबुत करते है, नए विचारों का संचार होता है। उन्होंने उम्मीद जताई कि नवीन कार्यकारिणी के सदस्य ऑल इंडिया संगठन के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करेंगे। प्रांतीय सचिव एवं राष्ट्रीय प्रवक्ता संजय रघुवंशी ने संगठन की गतिविधियों की जानकारी देते हुए कहा कि संघ व्यापारियों केहितों के लिए हमेशा संघर्षरत रहा है। आगामी दिनों में व्यापारी के निधन के बाद उसका लायसेंस परिवार के सदस्यों को ट्रांसफर हो सके इसकी सरकार से स्वीकृति कराई है जो संगठन की उपलब्धि है।

गर्ग बने जिलाध्यक्ष

इस दौरान जिला अध्यक्ष रमेश गर्ग को प्रदेश अध्यक्ष मानसिंह राजपूत ने रतलाम, मंदसौर,नीमच, अलीराजपुर एवं झाबुआ जिले का प्रभारी नियुक्त किया और श्री कलन्त्री ने रमेश गर्ग को नियुक्ति पत्र सौंपा।

नवीन कार्यकारिणी में यह हुए शामिल

मनोज बोराना, नरेंद्र पीपाडा, प्रवीण पाटीदार, मनीष मंडलेचा, सचिन संघवी, ओ पी पोरवाल, लोकेश मित्तल, नरेश पाटीदार, राजेंद्र अग्रवाल, हर्ष चोपड़ा, मांगीलाल मेहता, दिलीप अग्रवाल, सुरेश पाटीदार, शुभम जैन, योगेश राठौर निर्वाचित हुए। निर्वाचन अधिकारी नमन जैन ने निर्वाचन प्रक्रिया सम्पन्न कराई। इस कार्यक्रम में धराड, नामली, सैलाना, जावरा, सरवन, बाजना के व्यापारी बंधु भी शामिल हुए।

इंदौर जागरुक कृषि आदान विक्रेता संघ के जिलाध्यक्ष श्रीकृष्ण दुबे ने भी नवीन कार्यकारिणी को बधाई देते हुए कहा कि आप नए जोश नई उमंग नए तरंग के साथ में जो है कृषि आदान व्यापारियों के हित में अच्छे से अच्छे कार्य करें।

असुविधा से बचने के लिए खाद का करें अग्रिम उठाव

हलधर किसान

खरगोन। आगामी खरीफ सीजन में यूरिया कि किल्लत न हो इसके लिए जिले में यूरिया खाद का वितरण शुरु कर दिया गया है। जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक से सम्बद्ध खरगोन एवं बडवानी जिले की 182 प्राथमिक कृषि साख संस्थाओं में रासायनिक खाद का अग्रिम भंडारण किया गया है।

सीसीबी के सीईओपी. एस. धनवाल ने खरगोन-बड़वानी के किसानों से कि अपील

बैंक के सीईओपी. एस. धनवाल ने दोनों जिलों के किसानों से अपील की है कि, अपनी खरीफफसलों हेतु लगने वाले खाद का अग्रिम भंडारण कर लें संस्थाओं में पर्याप्त मात्रा में सभी प्रकार के रासायनिक खाद उपलब्ध है। वर्षा प्रारंभ होते ही उर्वरकों की मांग बढ जाती है, यदि किसानों द्वारा अपनी आवश्यकता के अनुसार खाद संस्था से अग्रिम उठाव कर लिया जाता है, तो संस्था के गोदाम में रिक्तता आने से संस्था द्वारा और अग्रिम भंडारण कर लिया जावेगा तथा संस्था को खाद भंडारण के लिए पर्याप्त स्थान उपलब्ध हो सकेगा, वही किसानों को भी पीक सीजन में खाद आपूर्ति की समस्या भी नही रहेगी। खरगोन एवं बडवानी जिले की सभी संस्थाओं को निर्देषित किया गया है, कि संस्था कार्य क्षैत्र के समस्त ग्रामों में डोंडी पिटवाकर किसानों को अग्रिम खाद के उठाव हेतु प्रेरित किया जाय ताकि किसानों को पीक सीजन में किसी प्रकार की कठिनाई न हो।

परखें कृषि ज्ञान, आसान सवालों का जवाब देकर पाएं आकर्षण उपहार

हलधर किसान से जुड़े पाठको के लिए हम लाए है कृषि से जुड़े आसान सवाल, जिनके जवाब देकर आप अपना सामान्य ज्ञान परखने के साथ ही पा सकते है आकर्षक उपहार, तो इस अंक में भारतीय कृषि अर्थशास्त्र से संबंधित महत्वपुर्ण प्रश्नों के दीजिए उत्तर-

प्रश्न . 1- भूमि विकास बैंक की स्थापना हुई थी

अ. 1912 में
ब. 1904 में
स. 1920 में
द. 1975 में — सही जवाब .....

प्रश्न. 2- फार्म पर एक महत्त्वपूर्ण अचल लागत (फिक्सड कोस्ट) है

अ. बीज पर लागत
ब. भूमि का किराया
स. फसल सुरक्षा पर लागत
द. उर्वरक पर लागत — **सही जवाब.....**

प्रश्न. 3-जब सीमान्त उत्पाद बढ़ती हुई दर से बढ़ता है, तब

अ. कुल उत्पाद घटती दर से बढ़ता है
ब. कुल उत्पाद बढ़ती दर से बढ़ता है
स. औसत उत्पाद घटता है
द. उपर्युक्त में से कोई नहीं .. — **सही जवाब ....**

प्रश्न.4-प्रक्षेत्र उपज की प्रविष्टि की जाती है।

अ. लोग बुक में...
ब. इन्वेंटरी बुक में...
स. फार्म स्टॉक रजिस्टर में ...
द. केस बुक में ... — **सही जवाब...**

प्रश्न. 5- बहुचर्चित 'आइरिश फेमीन' का कारण था

अ. आलू का अगेती झुलसा
ब. आलू का पिछेती झुलसा रोग
स. धान का झुलसा रोग
द. गेहूँ का रतुआ रोग — **सहीजवाब.....**

मार्च माह के सवालो का सही जवाब, सवाल 1-द, सवाल 2 -द, सवाल 3- अ, सवाल 4 का उत्तर- द है।

नोटः आपके जवाब हमें इस प्रश्नोत्तरी में दर्ज कर अखबार की कटिंग 25 नवंबर तक हमारे वाट्सएप्प नंबर (88174 02860) पर, या हमारे मुख्य कार्यालयः हमारे प्रधान कार्यालय 598, वेगॉस मॉल, कार्पोरेट बिल्डिंग, एस.14 द्वारका साउथ वेस्ट, नई दिल्ली 110075 या मप्र में 762, बीज भंडार भवन, न्यू नूतन नगर खरगोन में संपर्क कर सकते है। पर डाक के जरिये भेज सकते है। सही जवाब देने वाले पाठको का लॉटरी के जरिये परिणाम निकाला जाएगा। सही जवाब देने वाले विजेता को हलधर किसान की ओर से आकर्षण उपहार उनके भेजे गए पते पर भेजे जाएंगे। अगले अंक में हम सही जवाब और विजेता का नाम घोषित करेंगे।

ई- मेल - (haldharkisankgn@gmail.com) पर भी भेज सकते है।

मिर्च की खेती से किसान हो सकते है मालामाल, गर्मी की फसल में बरतें सावधानी

भोपाल. खेती.किसानी कमाई का बेहतर जरिया बन गया है। किसान कम लागत में अधिक मुनाफा देने वाले फसलों की खेती कर रहे हैं तो वही नगदी फसल में किसान मुख्य रूप से सब्जी की खेती करते हैं। सीजनल सब्जी की खेती किसानों को कम समय में बेहतर मुनाफा देकर जाता है। वही जिले के किसान हरी मिर्च की खेती से मालामाल हो सकते हैं। इसके लिए इस समय सीजन चल रहा है। जिला उद्यान अधिकारी कार्यालय की तरफ से भी मिर्च की खेती के लिए किसानों को प्रोत्साहित किया जा रहा है। हरी मिर्च एक तरह से खरीफ की नकद फसल है, वही लाल मिर्च की मांग भी अब विदेशों तक होने से देश में इसके दाम भी आसमान छूने लगे है। किसानों की आय दोगुना करने का एक साधन है।

जिले में भी बड़े पैमाने पर हरी मिर्च की खेती की जाती है। किसान मिर्च की खेती साल में तीन बार कर सकता है, पर किसान गर्मी के मौसम में यानी के अप्रैल महीने में मिर्च के बीज की बुवाई करनी चाहिए। और वर्षा ऋतु में मिर्च की खेती करना है तो आप जून महीना या जुलाई महीने में उन्नत किस्में के बीज की बुवाई कर के कर सकते है। इन के अलावा आप सितंबर महीना या अक्टूबर महीने में भी कर सकते है, जब आप बीज की बुवाई करते है इन के बाद ठीक 4 से 5 सप्ताह बाद मिर्च के पौधे अच्छे से अंकुरित होकर मुख्य खेत में इन पौधे को रोपाई कर सकते है।

मिर्च की उन्नत किस्में कौन कौन सी है?

मिर्च की खेती किसान ग्रीष्म ऋतू में करना है तो मिर्च उन्नत किस्में बाजार में कई सारी उपलब्ध है। जैसे की काशी अनमोल, जवाहर मिर्च.283, काशी विश्वनाथ, अर्का सुफ्ल तथा संकर किस्म काशी अर्ली, काषी सुर्ख या काशी हरिता इन किस्में की खेती कर के किसान हरी और लाल दोनो मिर्च का उत्पादन प्राप्त कर के अच्छी कमाई कर सकता है।

रोपाई का तरीका

मिर्च के पौधे की मुख्य खेत में रोपाई करने से पहले खेत की अच्छे से तैयारी करलेनी चाहिए। इन के बाद पौधे की रोपाई करने के लिए कतार से कतार की दूरी 60 सैमी की और पौधे से पौधे की दूरी 40 से 45 सैमी की रखनी चाहिए। और जब आप गर्मी मौसम में मिर्च के पौधे की रोपाई कर रहे है तो शाम के समय पौधा लगाना चाहिए। मिर्च की खेती में इस बात का भी ध्यान रखे की जब पौधे की सिंचाई करे तब जल भराव नहीं होना चाहिए और ज्यादा जल।भराव से फंगस लगने का खतरा रहता है। और पौधे रोपाई के बाद एक सिंचाई जरूर करे इन के बाद गर्मी के मौसम में पानी आप 6 से 7 दिन के अंतर में देते रहे।

खरपतवार नियंत्रण कैसे करें?

मिर्च की खेती में खरपतवार नियंत्रण करना बहुत जरूरी है नही तो पौधे पर कई रोग और कीट अटैक कर देते है और पौधे को बहुत नुकसान पहुंचाते है। इस लिया जब पौधे की रोपाई करनी है इन से पहले आप ऑक्सीफ्लोरफेन दवाई का छिड़काव करके भी नियंत्रण कर सकते है। मिर्च की खेती में जब पौधे अच्छे से अंकुरित हो जाते है और फूल या मिर्च लगने लगते है तब कई प्रकार के रोग अटैक करते है। मिर्च की खेती में ज्यादातर जड़ गलन, छिछिया रोग, पत्ते पर धब्बा, तना और पत्तो छेदक इसली, माहू इस प्रकार के रोग और कीट अटैक करते है।

भारत 2025 के अंत तक यूरिया का आयात बंद कर देगा: मंत्री मांडविया

हलधर किसान नई दिल्ली। खरीफ और रबी सीजन में यूरिया के लिए परेशान होने वाले किसानों के लिए राहत भरी खबर है।

भारत 2025 के अंत तक यूरिया का आयात बंद कर देगा। यह जानकारी खुद रसायन व उर्वरक मंत्री मनसुख मांडविया ने दी है। उन्होंने कहा कि घरेलू विनिर्माण पर बड़े पैमाने पर जोर देने से आपूर्ति और मांग के बीच अंतर को पाटने में मदद मिली है। मांडविया ने कहा कि भारतीय कृषि के लिए उर्वरकों की उपलब्धता बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि देश पिछले 60.65 साल से फसल उत्पादन बढ़ाने के लिए रासायनिक उर्वरकों का इस्तेमाल कर रहा है। अब सरकार नैनो लिक्विड यूरिया और नैनो लिक्विड डाइ.अमोनियम फॉस्फेट (डीएपी) जैसे वैकल्पिक उर्वरकों को बढ़ावा देने के प्रयास कर रही है। मंत्री ने कहा वैकल्पिक उर्वरकों का उपयोग फसल और मिट्टी की गुणवत्ता के लिए अच्छा है। हम इसे बढ़ावा दे रहे हैं। यूरिया उत्पादन में आत्मनिर्भरता हासिल करने के बारे में पूछे जाने पर मांडविया ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी नीत सरकार ने यूरिया आयात पर निर्भरता खत्म करने के लिए दोतरफा रणनीति अपनाई है। मंत्री ने बताया सरकार ने चार बंद यूरिया संयंत्रों को फिर शुरू किया है और एक अन्य कारखाने को वापस चालू करने का काम जारी है। उन्होंने कहा कि घरेलू मांग को पूरा करने के लिए भारत को सालाना करीब 350 लाख टन यूरिया की जरूरत होती है।

खेती किसानी भी हुई आधुनिक, विलुप्त होती जा रही बैलजोड़ी की परंपरा

भोपाल। बदलते परिवेश और आधुनिक युग में अब खेती भी मॉडर्न होने लगी है। खेत में हल और बैलों के साथ काम करते हुए किसान, अब कम नजर आते है। बैलों से खेती का कार्य धीरे.धीरे लुप्त होता जा रहा है। इनकी जगह अब ट्रैक्टर ट्राली ले चुके हैं। चाहे फसलों की दुलाई करनी हो या खेत में जुताई सभी कार्य ट्रैक्टर द्वारा किए जा रहे हैं। कहने मात्र को किसी गांव में भले ही खेती का कार्य बैलों से होता हो, लेकिन उस समय जो बैलों द्वारा कार्य होता था वह धीरे.धीरे समाप्त हो रहा है। बैलों का बड़ा ही महत्व था। टेक्नोलाजी ने खेती किसानी को काफी बदल दिया है। ट्रैक्टर से अब चंद घंटे में कई एकड़ जमीन की जुताई करना हो या मशीनों के माध्यम से कटाई मड़ाई आदि की प्रक्रिया पूरी करनी हो यह सब कुछ बहुत तेजी के साथ हो जाता है। मशीनों ने किसानों को एडवांस बना दिया है। वह खेती में टेक्नोलॉजी का प्रयोग कर समय बचाते हैं। अब तो मशीनों के कई एडवांस वर्जन भी आने लगे हैं। अकेले जुताई के लिए ही 4 से अधिक यंत्र किसानों के पास पहुंच चुके हैं, जिसमें कल्टीवेटर, रोटावेटर, हैरो जैसे हल मिट्टी की जुताई में काम आते हैं।

कम हुआ पारंपरिक खेती का दायरा- आज भी कई गांवों में किसान पारंपरिक तरीके से ही दो बैलों की जोड़ी और हल के साथ खेतों की जुताई करते हैं, लेकिन यह दायरा कम है। अन्नदाता की यह परंपरा शायद अपने अंतिम दौर में है। पारंपरिक खेती का यह स्वरूप अब विलुप्त होता जा रहा है। नई पीढ़ी के किसान अब बैल और हल के माध्यम से काम नहीं करते क्योंकि इसमें बहुत ही अधिक समय लगता है। हालांकि मिट्टी की गुणवत्ता को बनाने में जितना अधिक इसका योगदान होता है वह किसी अन्य प्रकार के हल में मौजूद नहीं है लेकिन समय की बचत के कारण अब तकनीकी रूप से सक्षम ट्रैक्टर आधारित हल का ही प्रयोग किया जा रहा है।

कैसे हो रही है अभी भी पारंपरिक खेती- 70 के दशक अथवा इसके पहले के जो भी किसान इस वक्त खेती कर रहे हैं उनमें छोटी जोत का इस्तेमाल करने वाले किसान हल और बैल के माध्यम से ही अभी भी पारंपरिक खेती करते हैं। इसमें लकड़ी का बना एक जुआ होता है, जिसमें दो बड़े खाने बने होते हैं। इन दोनों बड़े खानों को बैलों की डील पर पहना दिया जाता है। जिससे दोनों बैल एक समानांतर दूरी पर खड़े हो जाते हैं। इसके बाद लकड़ी अथवा लोहे की लगभग 5 मीटर लंबी छड़ से लोहे का एक हल जुड़ा होता है। जिसका नुकीला भाग जो जमीन को फाड़ कर उसे पलटता है वह नीचे की ओर होता है। जबकि उसको संभालने के लिए और उसको दिशा देने के लिए ऊपर एक मुठिया बनी होती है, जिसे किसान अपने हाथ में पकड़ता है। बाई ओर चलने वाले बैल से एक रस्सी बंधी होती है जिसे नाथ बोलते हैं और यह भी किसान अपने एक हाथ में पकड़ कर रखता है, जिससे बैल को किसी भी दिशा में घुमाने के दौरान मदद मिलती है। सामान्यता बैलों को बाएं ओर ही घुमाया जाता है इसलिए बाएं ओर मौजूद बैल की नाथ से ही डोरी जुड़ी होती है। खेतों में हल के माध्यम से जो जुताई होती है उसे हराई बोलते हैं यानी एक लाइन में जो जुताई हो रही है वह पूरा सिस्टमैटिक रूप से आगे बढ़ता है। हर एक लाइन के बाद दूसरी लाइन में जुताई होती है और धीरे.धीरे इसी तरह पूरा खेत जोता जाता है।

खेती की कहानी, किसान लेखा नायक की जुबानी - खरगोन जिले के गोगावां तहसील के ग्राम घुघरियाखेड़ी के रहने वाले किसान लेखा नायक पारंपरिक खेती को लेकर बताते हैं कि वे आज भी बैलजोड़ी से ही हलनी. बखरनी, जुताई करते है। हां, ट्रेक्टर का इस्तेमाल भी होता है लेकिन केवल खेत की सफाई के लिए। जहां जोत बड़ी है वहां समय बचाने के लिए ट्रैक्टर का प्रयोग किया जाता है। मिट्टी अधिक गुणवत्ता से अन्य उगाने के लिए बनाने की प्रक्रिया हल के माध्यम से ही संभव है। टेक्नोलॉजी से केवल उसका विकल्प मिला है पर वह क्वालिटी किसी अन्य चीज से नहीं आ सकती। बैल और हल के माध्यम से जुताई किए गए खेत उत्पादन के दौरान भी फर्क देखने को मिलता है। हम मिट्टी से जुड़े हैं, मिट्टी में रहते हैं, मिट्टी से ही जीवन यापन होता है और अंतिम समय भी मिट्टी में मिलते हैं। ऐसे में जब हम अपनी पारंपरिक खेती को आगे बढ़ाते हैं तो जो हमारे पूर्वज करते रहे हैं हम भी उसका निर्वाहन करते हैं और या हमें जीवन से और जमीन से जोड़ कर रखता है।

सरकार हमारे बारे में सोचे- वो कहते हैं कि किसानों के बारे में सरकारों को और सोचना चाहिए। बड़े.बड़े उद्यमियों और अमीरों के ख्वाबों के कर्ज माफ कर दिए जाते हैं लेकिन, किसान का छोटा सा अंश भी माफ करने पर हो.हल्ला होने लगता है। हमारी स्थिति अच्छी नहीं है लेकिन, हम खुश हैं कि हम अपना भी पेट भरते हैं और अपने देश के नागरिकों के लिए भी कुछ ना कुछ अपना फर्ज निभाते हैं।

आवागमन का साधन भी होती थी बैलगाड़ी

शादी के अवसर पर लोग बैलगाड़ी का प्रयोग करते थे । बैलगाड़ी पर नई नवेली दुल्हन भी बैठ कर अतिथी बारात से लेकर गौने तक सभी कार्य बैलगाड़ी द्वारा संपन्न होते थे। अगर कहीं दूर बारात लेकर जाना होता था।तो इस बैलगाड़ी पर खाने पीने की चीजे रख लेते थे और समय से पहले वहां पहुंच जाते थे।जब किसान बैलों द्वारा खेती करता था तो वह व्यक्ति बीमार बहुत कम पडता था।आज के युग में बीमारी ने किसी को नहीं छोड़ा चाहे वह किसान हो या कोई साधारण व्यक्ति सभी लोग रोगों से पीड़ित है किसी को शुगर हो गया है तो किसी का ब्लड प्रेशर हाई है। बहुत से लोग हृदय गति रुक जाने के कारण काल के मुंह में समा जाते हैंसजब बैलों द्वारा खेती होती थी तो कहीं किसी को कोई छुट्टा जानवर घूमते नहीं मिलता था।बछड़ों की बड़ी.बड़ी बाजार लगती थी। जहां पर सैकड़ो संख्या में बछड़े प्रतिदिन बिकते थे।किसान लोग इन बछड़ों को घर में लाकर खेती का कार्य करने के लिए उन्हें ट्रेड करते थे।इससे हमारे देश का किसान खुशहाल रहता था ।इसी तर्ज पर कहा गया है कि भारत कृषि प्रधान देश है ।लेकिन आज कथनीऔर करनी में बड़ा अंतर आ गया है।भारत देश का किसान दिनों दिन महंगाई के चलते बेहाल हो रहा है। मेहनत करने के बावजूद भी उसे लाभ नहीं मिल पा रहा है।फसल की बुवाई से लेकर कटाई तक किसान जाड़ा, गर्मी एवरसात को सहते हुए अपने फसलों की छुट्टा जानवरों से रखवाली कर रहा है।जिस देश का किसान बेहाल होगा उस देश का कभी भी कल्याण नहीं हो सकता है। क्योंकि किस को अन्नदाता कहा गया है।

चुनाव बाद ऑनलाईन दवा दुकानों पर लगेगा ताला!

नई दिल्ली। आधुनिक युग में कोई भी सामान हो सब ऑनलाइन मंगाया जा रहा है, लेकिन मेडिसन ऑनलाइन मंगाना खतरे से खाली नहीं है। क्योंकि बिना चिकित्सक के परामर्श कोई भी दवाई अपनी मर्जी से लेना खतरनाक हो सकता है, इसके बावजूद ऑनलाईन यह दवाईयां धड़ल्ले से बेची जा रही है।

केंद्र सरकार ऑनलाइन दवा की दुकानों या ई.फार्मेसी को विनियमित करने की योजना बना रही है। संभव है कि इन पर प्रतिबंध भी लगा दिया जाए। हालांकि, इस पर कोई आखिरी फैसला नहीं लिया गया है। इस संबंध में औषधि, चिकित्सा उपकरण और प्रसाधन सामग्री विधेयक 2023 पेश किया गया है, से फिलहाल विभिन्न मंत्रालयों के पास मंथन के लिए भेजा गया है। ये कवायद ऐसे समय में शुरू की गई है जब पिछले ही महीने नियमों के उल्लंघन को लेकर स्वास्थ्य मंत्रालय ने 20 ऑनलाइन दवा बिक्री कंपनियों को नोटिस भेजा थाद्ध

पिछले साल सौंपा गया था विधेयक

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबकि पिछले साल की ऑनलाइन दवा बेचने वाली कंपनियों के खिलाफ विधेयक बनाकर मंत्रालय को सौंपा गया था। जिस पर कार्यवाही की तैयारी थी। लेकिन इसी बीच आचार संहिता लग गई। जिसके बाद मामला ठंडे बस्ते में चला गया। बताया जा रहा है कि चुनाव के बाद ऑनलाइन फार्मेसी पर शिकंजा कसने की पूरी तैयारी सरकार की है। आपको बता दें कि ई.फार्मेसी को नियंत्रण में लाने के लिए नए कानून पर भी चुनाव बाद फैसला होने की पूरी उम्मीद जताई जा रही है। इसलिए डिजिटली चलने वाली दवाओं को बंद किया ही जाना चाहिए, ऐसा विधेयक सौंपा गया था। ताकि लोगों की जिंदगी से खिलवाड़ होना बंद हो जाए।

गलत तरीके से पैसे की वसूली

चर्चा के दौरान इस बात पर भी जोर दिया गया कि जहां ऑनलाइन दवा कंपनियों से व्यक्ति की निजी जानकारी स्टोर की जा रही है। वहीं ग्राहक से अनाब.सनाब पैसा भी वसूला जा रहा है। यही नहीं बिना चिकित्सक की पर्ची के खरीदी गई दवाएं स्वास्थ्य के लिए भी हानिकारक साबित हो रही है। देश में लाखों लोगों की सेहत पर भी इसका बुरा असर देखने को मिला है। एक सर्वे के मुताबिक अबोर्शन की ऑनलाइन दवाएं महिलाओं को कम उम्र में ही बांझपन की समस्या से जूझ रही हैं। इसका कारण भी ऑनलाइन दवा मार्केट ही है।

डाटा चोरी होने का बड़ा खतरा

सरकार ने माना है कि ऑनलाइन दवा बेचने वाली कंपनियां रोगी का डाटा स्टोर करती हैं। पिछले साल ऐसी 20 ई.फॉर्मेसी कंपनियों को सरकार ने नोटिस भी भेजा था। सरकार द न्यू ड्रग्स मेडिकल डिवाइसेज एंड कॉस्मेटिक्स बिल 2023 को लाने की तैयारी कर रही है। साथ ही पुराने बिल को बदलने की योजना बनाई जा रही है। हालांकि अभी सरकार की ओर से अधिकारिक बयान तो जारी नहीं किया गया है, लेकिन बिल को लेकर चर्चा जरूर चल रही है। बताया जा रहा है कि चुनाव बाद अधिकारिक सर्कुलर भी जारी कर दिया जाएगा।

एजेंसी देना है

प्रतिष्ठित मासिक समाचार पत्र हलधर किसान कृषि क्षेत्र से जुड़े शोध, अनुसंधान, नई तकनिक, योजनाओं के राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय समाचारों के समावेश के साथ नियमित रुप से प्रकाशित हो रहा है। अखबार की प्रतियां नियमित रुप से प्राप्त करने के लिए वार्षिक सदस्यता लेने, एजेंसी/ विज्ञापन प्रकाशन के लिए हमारे वाट्सअप नंबर(88174 02860) या हमारे प्रधान कार्यालय 598, वेगॉस मॉल, कार्पोरेट बिल्डिंग, एस.14 द्वारका साउथ वेस्ट, नई दिल्ली 110075 या मप्र में 762, बीज भंडार भवन, न्यू नूतन नगर खरगोन में संपर्क कर सकते है। लेख प्रकाशन के लिए भी वाट्सअप नंबर पर भेज सकते है।

प्रचंड गर्मी का गेहूं फसल नही होगा असर, आईएमडी ने जताया अनुमान

हलधर किसान, नई दिल्ली।
इस बार गर्मियों में अप्रैल से जून के बीच अत्यधिक गर्मी महसूस की जाएगी। इसका सबसे अधिक असर मध्य और पश्चिमी भारत में दिखेगा। मौसम विभाग यानी कि आईएमडी ने यह जानकारी साझा करते हुए कहा कि तापमान में वृद्धि का गेहूं की तैयार फसल पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। भारत मौसम विज्ञान विभाग के महानिदेशक मृत्युंजय महापात्र ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान कहा कि भारत में अप्रैल.जून की अवधि के दौरान अत्यधिक गर्मी का सामना करना पड़ेगा। गेहूं की कटाई के दौरान उत्तर भारत के कई हिस्सों और पूर्वी और पश्चिमी तटों पर अधिकतम तापमान सामान्य से 2.3 डिग्री सेल्सियस ऊपर और देश के बाकी हिस्सों में सामान्य के आसपास रहने की संभावना है, हालांकि मध्य प्रदेश को छोड़कर गेहूं उत्पादक राज्यों के लिए लू की कोई चेतावनी नहीं है।

देश के विभिन्न हिस्सों में सामान्यतः चार से आठ दिनों की तुलना में दस से 20 दिनों तक लू चलने की आशंका है।

मध्य प्रदेश में इस समय तापमान 37.40 डिग्री सेल्सियस के आसपास है और अगले सप्ताह 42 डिग्री तक जाने की संभावना है। चूंकि राज्य में गेहूं की कटाई का 90 फीसदी काम पूरा हो चुका है, इसलिए कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के आंकड़ों का हवाला देते हुए उन्होंने यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि अगर तापमान 35 डिग्री सेल्सियस से ऊपर चला गया तो भी पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश में कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

भारत ने 2022.23 के दौरान 110.55 मिलियन टन गेहूं का उत्पादन किया।इसमें से उत्तर प्रदेश का हिस्सा 30. 40 प्रतिशत, मध्य प्रदेश का 20.56 प्रतिशत, पंजाब का 15.18 प्रतिशतए हरियाणा का 9.89 प्रतिशत और राजस्थान का 9.62 प्रतिशत था।

कैसा रहेगा मौसम?

गर्मी की लहरों के शुरुआती हमले ने 2022 में भारत में गेहूं की फसल को प्रभावित किया, उत्पादन 2021 में 109.59 मिलियन टन से घटकर 107.7 मिलियन टन हो गयाण् इसने देश, दुनिया के दूसरे सबसे बड़े गेहूं उत्पादक भारत को निर्यात पर प्रतिबंध लगाने के लिए मजबूर कर दिया। गेहूं की फसल अक्टूबर में बोई जाती है और अधिकांश हिस्सों में कटाई अप्रैल के आसपास शुरू होती है। आईएमडी ने बताया कि 80.85 प्रतिशत गेहूं की फसल या तो जल्दी या समय पर 25 अक्टूबर से 30 नवंबर के बीच बोई गई थी, जिसमें 70 प्रतिशत से अधिक बोए गए क्षेत्र में गर्मी सहने वाली किस्मों को लगाया गया था। इस साल गेहूं का उत्पादन करीब 112.114 मिलियन टन होने की उम्मीद है।

स्वामी विवेक जैन, प्रकाशक विवेक जैन, मुद्रक कैलाश महाजन द्वारा गोपाल प्रिंटिंग प्रेस, तिलक पथ, खरगोन से मुद्रित एवं 26/1, विवेकानंद कॉलोनी, वार्ड नंबर 5, खरगोन से प्रकाशित, संपादक विवेक जैन।.RNI No. MPHIN/2022/85285, मोबा. नं.98262 25025, 94254 89337 (समस्त प्रकार के विवादों के लिए न्याय क्षेत्र खरगोन रहेगा)।